हिंदी एवं मालवी के क्रियापदों का व्यतिरेकी अध्ययन : एक रूपवैज्ञानिक विश्लेषण

(Contrastive study of Hindi and Malvi's Verb Phrases : A Morphological Analysis)

एम.फिल. भाषाविज्ञान उपाधि हेतु

लघु – शोध प्रबंध

सत्र- 2015-16

ज्ञान शांति मैत्री

शोध निर्देशक

डॉ. एच.ए. हुनगुंद
सहायक प्रोफ़ेसर

शोधार्थी

दिव्या गुप्ता
पंजीयन क्रमांक- 2015/01/217/003

भाषाविज्ञान एवं भाषा प्रौद्योगिकी विभाग

भाषा विद्यापीठ

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा(महाराष्ट्र)

(संसद द्वारा पारित अधिमियम 1997 क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

गांधी हिल्स, वर्धा-442001, महाराष्ट्र (भारत) दूभाष : 07152-251170, वेबसाइट: www.hindivishwa.org

भूमिका-

हिंदी को १४ सितम्बर १९४९ को भारतीय संविधान में भारत संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया। हिंदी भारत के अधिकांश लोगों की भाषा है खासकर इस अर्थ में उपयुक्त क्षेत्रों मेंबोली जाने वाली भाषाओं के लिए यह एक छतरी के समान है। हिंदी का क्षेत्र विस्तृत है। यह उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान , दिल्ली , हिमाचल प्रदेश , हरियाणा , उत्तराखंड , झारखंड आदि क्षेत्रों में बोली जाती है। विश्व के विभिन्न भागों जैसे वेस्टइंडीज, दक्षिण अफ्रीका ,केन्या , यूनाइटेड अरब, अमीरात, कनाडा ,यमन,जाम्बिया ,यू.के. और अमेरिका में यह भाषा प्रचलित है। हिंदी ब्रज, राजस्थानी, भोजपुरी, अवधी ,मैथिली, बुंदेली,मगही जैसी नजदीकी भाषाओ की भी संपर्क भाषा है। यह भौगोलिक द्रष्टि से पंजाब एवं हरियाणा जैसे समतल प्रदेशों की ही नहीं बल्कि हिमाचल और गढ़वाल जैसे पहाड़ी प्रदेशों की भी संपर्क भाषा है।

मालवी एक क्षेत्रीय भाषा है, जो मध्यप्रदेश के उत्तर पश्चिम हिस्से में और राजस्थान के झालावाड़ जिले में बोली जाती है। इसके दूसरे नाम है मालवाडा, मालो और उज्जैनी। यह ना तो दक्षिण राजस्थानी की उप-बोली है न पूर्वी हिंदी की बल्कि यह पश्चिमी हिंदी के अंतर्गत आती है। मालवी भाषा की अपनी एक अलग पहचान है। कहा जाता है कि मालवी भाषा मध्य इंडो आर्यन परिवार के "अवंथी प्राकृत" की प्रत्यक्ष वंशज है।

हिंदी और मालवी के रूप और ध्वनि में पर्याप्त विषमताएं भी है और समानताएं भी, जो शोध कार्य मैंने किया है वह एक नवीन प्रयास है।

उदारहण:

१. हिंदी – राम आम खा रहा है।
   मालवी – राम आम खाई रो है।
२. हिंदी- सीता पका हुआ आम खा रही है।
   मालवी- सीता पाक्यो आम खाई री है।
३. हिंदी- मैं विद्यालय नहीं जाता हूँ।
   मालवी- मैं स्कूल नी जाऊ।
४. हिंदी- अन्दर आ जाओ।
   मालवी- मायते अइजा।
५. हिंदी- बच्चों ने खाना खाया और ठंडा पानी पिया।

मालवी- छोरा-छोरी ए जिमियो ने ठण्डो पानी पियो।

उदाहरण में दिए गए वाक्यों को ध्यानपूर्वक पढ़ने पर हम यह देख सकते है कि मालवी में हिंदी के जैसी ही संरचना है, परंतु उसमें ध्वनि एवं शब्द स्तर पर अंतर प्रतीत हो रहा है, जैसे की हिंदी में 'आ जाओ' क्रिया मालवी में 'अईजा' हो जाती है।

प्रस्तुत शोध –प्रबंध में रूप विज्ञान के स्तर पर हिंदी और मालवी की क्रियाओं में असमानता अर्थात व्यतिरेकी को दिखाने का प्रयास किया गया है।

शोध की समस्या:

१. साहित्य का आभाव- किसी भी बोली या भाषा का प्रचार प्रसार उसके साहित्य या अखबारों से होता है।मालवी में इसका बहुत अभाव है। पर्याप्त सामग्री उपलब्ध नहीं होने के कारण आकड़ा संकलन में समस्या आएगी।

२. अन्य भाषाओं का कोड मिश्रण तथा कोड स्विचिंग- मालवी में अन्य बोली जैसे बुंदेली के शब्द प्रयोग में आ रहे है। अंग्रेजी की बढ़ती लोकप्रियता के कारण मालवी का स्वरुप खोता जा रहा है। जैसे : हिंदी- मैं विद्यालय नहीं जाता हूँ। मालवी- मैं स्कूल नी जाऊ। विद्यालय के स्थान पर 'स्कूल' का प्रयोग होता है। अन्य भाषाओ के मिश्रण के कारण मालवी का मूल स्वरुप खोता जा रहा है।

परिकल्पना/ शोध वक्तव्य :

१. यद्यपि मालवी, हिंदी की एक आधार बोली है, तथापि मालवी के व्याकरण और हिंदी के व्याकरण में समानताओं के साथ-साथ भिन्नता भी पाई जाती है।

२. इसे सभी व्याकरणिक इकाईयों के सन्दर्भ में देखा जा सकता है।

३. प्रस्तावित अध्ययन में हिंदी और मालवी में पाई जाने वाली भिन्नताओ को विश्लेषित, विवेचित करते हुए, दोनों के संबंधो का स्वरुप विवेचन अभीष्ट है।

४. मालवी और हिंदी के व्यतिरेकी विवेचन से यह निश्चित करने में काफी मदद मिल सकती है कि भाषा की द्रष्टि से दोनों कितने स्वतंत्र है।

शोध की सीमाएं-

प्रस्तुत शोध की निम्नलिखित सीमाएं है-

१. प्रस्तुत शोध में हिंदी और मालवी का सिर्फ रूपविज्ञान के स्तर पर क्रिया पदबंध का व्यतिरेकी विश्लेषण किया गया है।

२. प्रस्तुत शोध उज्जैन जिले में बोली जा रही मालवी तक सीमित है।

महत्व : प्रस्तुत शोध के महत्व को देखें तो यह निम्नलिखित क्षेत्रों में उपयोगी हो सकता है –

१. इस शोध कार्य के आधार पर हिंदी भाषा तथा मालवी को समझने में मदद मिलेगी।

२. इस शोध कार्य के माध्यम से मालवी बोली तथा हिंदी भाषा की प्रकृति को समझा जा सकता है।

३. भविष्य में इस क्षेत्र में किए जाने वाले शोध कार्यों के लिए यह प्रासंगिक विषय है।

४. भाषा शिक्षण के क्षेत्र में भी यह शोध कार्य उपयोगी सिद्ध होगा।

५. मशीनी अनुवाद के क्षेत्र में भी यह शोध कार्य उपयोगी सिद्ध होगा।

६. रूप वैज्ञानिक अध्ययन में।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध के प्रमुख बिंदु प्रस्तुत लघु शोध-प्रबंध में चार अध्याय हैं। जिनमें निम्नलिखित बातों को समाविष्ट किया गया है-

प्रथम अध्याय का शीर्षक है **"हिंदी और उसकी आधार बोलियाँ"** इसमें कुल चार उपशीर्षक हैं। प्रथम उपशीर्षक **'मानक हिंदी का परिचय एवं बोलियाँ'** जिसमें हिंदी का परिचय देते हुए उसकी बोलियों के बारे में बताया गया है। द्वितीय उपशीर्षक **'मालवी परिचय'** में मालवी भाषा के बारे में विस्तार से बताते हुए उसकी उपबोलियों का भी वर्णन किया गया है। तृतीय उपशीर्षक **'हिंदी भाषा की संरचना'** में हिंदी की भाषिक इकाइयों को बतलाया गया है तथा चतुर्थ उपशीर्षक **'मालवी भाषा की संरचना'** है।

द्वितीय अध्याय **"व्यतिरेकी अध्ययन"** के अंतर्गत चार उपशीर्षक है। प्रथम उपशीर्षक **'व्यक्तिरेकी भाषाविज्ञान का परिचय'** इसके अंतर्गत भाषाविज्ञान में व्यतिरेकी की जरुरत को बताया गया है। द्वितीय उपशीर्षक **'व्यतिरेकी भाषा विज्ञान का स्वरुप और अर्थ'** है। तृतीय उपशीर्षक **'व्यतिरेकी भाषा विज्ञान का महत्त्व'** है जिसमें भाषा विज्ञान के क्षेत्र में व्यतिरेकी के महत्व को बतलाया गया है तथा चतुर्थ उपशीर्षक **'व्यतिरेकी विश्लेषण : सिद्धांत और स्वरुप'** है।

तृतीय अध्याय **"रूपविज्ञान: सैद्धांतिक पक्ष"** के अंतर्गत सात उपशीर्षक है, जो इस प्रकार है १. रूप विज्ञान की परिभाषा २. रूपविज्ञान का स्वरुप ३. रूपविज्ञान की शाखाएँ ४.रूप, उपरूप एवं रूपिम ५. रूप निर्देशन की पद्धतियाँ ६. विशिष्ट रूपिम तथा ७. रूपिम विश्लेषण के सिद्धांत है।

चतुर्थ अध्याय **"हिंदी एवं मालवी क्रिया पदबंध की संरचना"** के अंतर्गत चार उपशीर्षक है। प्रथम उपशीर्षक **'क्रिया : स्वरुप एवं परिभाषा'** इसमें विभिन्न भाषाविदों द्वारा दी गई क्रिया की परिभाषा को बताया गया है एवं उसके स्वरुप को भी। द्वितीय उपशीर्षक **'क्रिया पदबंध'** के अंतर्गत क्रिया पदबंध को समझाते हुए हिंदी एवं मालवी के उदाहरण दिए गए हैं। तृतीय उपशीर्षक **'क्रिया पदबंध के प्रकार'**, इसमें भी हिंदी एवं मालवी के उदाहरण देकर उनका विश्लेषण किया गया है। चतुर्थ उपशीर्षक **'काल'** है जिसमें क्रिया रूपों का विश्लेषण कर व्यतिरेकी अध्ययन किया गया है।

शोध प्रविधि : प्रस्तुत शोध विश्लेषणात्मक है। इसके अंतर्गत हिंदी और मालवी का व्यतिरेकी विश्लेषण रूप वैज्ञानिक आधार पर किया गया है। शोध कार्य में मुख्यतः,द्वितीयक स्त्रोतों का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक स्त्रोतों के रूप में प्रमुख पुस्तकों, पत्र-पत्रिकओं, वेबसाइट इत्यादि का प्रयोग किया है।

उपसंहार में संपूर्ण विवेचन का सारगर्भित संक्षेपण किया गया है।

संदर्भ ग्रंथसूची में उन महत्वपूर्ण पुस्तकों का नाम दिया गया हैं जिनके बिना इस शोध कार्य का पूरा होना असंभव था।

१.१. मानक हिंदी

हिंदी संवैधानिक रूप से भारत की प्रथम राजभाषा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझे जाने वाली भाषा है। हिंदी राष्ट्रभाषा, राजभाषा, संपर्क भाषा, जनभाषा के स्तर को पार कर विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है। भाषा विकास क्षेत्र से जुड़े वैज्ञानिकों की भविष्यवाणी हिंदी प्रेमियों के लिए बड़ी संतोषजनक है कि आने वाले समय में विश्वस्तर पर अंतरराष्ट्रीय महत्व की जो थोड़ी बहुत भाषाएँ होंगी उनमें हिंदी भी प्रमुख होगी।

हिंदी शब्द का संबंध संस्कृत शब्द**सिंधु** से माना जाता है। 'सिंधु' सिंध नदी को कहते थे और उसी आधार पर उसके आस-पास की भूमि को सिंधु कहने लगे।

हिंदी की आदि जननी संस्कृत है। संस्कृतपालि, प्राकृत भाषा से होती हुई अपभ्रंश तक पहुँचती है। फिर अपभ्रंश, अवहट्ट से गुजरती हुई प्राचीन या प्रारंभिक हिंदी का रूप लेती है।

हिंदी को 'हिंदवी', 'रेख्ता', दक्खिनी, खड़ी बोली आदि नामों से भी बुलाया जाता है।

हिंदी हिंद्यूरोपीय भाषा-परिवार के अंदर आती है। ये हिंद इरानी शाखा की हिंद आर्य उपशाखा के अंतर्गत वर्गीकृत है। हिंद्आर्य वो भाषाएँ है जो संस्कृत से उत्पन्न हुई है। उर्दू, कश्मीरी, बंगाली, उड़िया, पंजाबी, रोमानी, मराठी, नेपाली जैसी भाषाएँ भी हिंद-आर्य भाषाएँ है।

हिंदी की बोलियाँ

हिंदी का क्षेत्र विशाल है तथा हिंदी की अनेक बोलियाँ हैं। इनमें से कुछ में अत्यंत उच्च श्रेणी के साहित्य की रचना भी हुई है। ऐसी बोलियों में ब्रजभाषा और अवधी प्रमुख हैं। ये बोलियाँ हिंदी की बोलियाँ है और शक्ति भी। वे हिंदी की जड़ो को गहरा बनाती है। हिंदी की बोलियाँ और उन बोलियों की उपबोलियाँ हैं जो न केवल अपने में एक बड़ी परंपरा, इतिहास, सभ्यता को समेटे हुए हैं अपितु स्वतंत्रता संग्राम, जनसंघर्ष, वर्तमान के बाजारवाद के खिलाफ भी उसका रचना संसार सचेत है।

आधुनिक भाषाओं के विकास के पूर्व इस प्रदेश में मुख्यतः पांच प्राकृत प्रचलित थी। उपनागर अपभ्रंश से राजस्थानी, शौरसेनी से पश्चिमी हिंदी, मागधी से बिहारी हिंदी, खस से पहाड़ी हिंदी का विकास हुआ। इस प्रकार हिंदी की पाँच उपभाषाएँ हुई।

1.	राजस्थानी हिंदी	मारवाड़ी, ढूँढाड़ी मेवाड़ी, हाड़ौती।
2.	पश्चिमी हिंदी	कौरवी, ब्रजभाषा, हरियाणी, बुंदेली, कन्नोजी।
3.	पूर्वी हिंदी	अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी।
4.	बिहारी हिंदी	भोजपुरी, मगही, मैथिली।
5.	पहाड़ी हिंदी	पश्चिमी पहाड़ी, मध्यवर्ती पहाड़ी (कुमायूँनी गढ़वाली)।

इन बोलियों में मालवी को नहीं लिखा गया है,उसका संक्षेप परिचय यहाँ है-

मालवी- मालवी बोली मालव पठार के निवासियों द्वारा बोली जाती है। ये लोग ज्यादातर खेतिहर है। भोपाल की ओर बढ़कर मालवी बोली बुंदेलखंडी से मिलती हैं, पश्चिम की और राजस्थानी से इसकी भेंट होती हैं। "लिंगविस्टिक सर्वे आफ इंडिया" में ग्रियर्सन ने मालवी को राजस्थानी की मुख्य उपबोली माना है। मगर भाषा परक वैज्ञानिक अध्ययन करने पर मालवी का संभवतः स्वतंत्र अस्तित्व सिद्ध होता है और यह बोली संस्कृत व्याकरणों द्वारा सूचित अवंती अपभ्रंश से सीधे संबंधित प्रतीत होती है। वर्तमान मालवी पर अनेक स्थानीय उच्चारणों का प्रभाव है, पर उसका मूल रूप सभी जगह एक-सा है। करीब, 9,05,405 लोग मालवी बोलते हैं। पश्चिम मालवी में खासकर नीमच और मंदसौर जिलों में मालवी पर राजस्थानी का प्रभाव स्पष्ट है। उत्तर-पूर्वी मालवा में मालवी पर गुजराती का कुछ प्रभाव देखने में आता है, जबकि इस क्षेत्र में भीली का प्रभाव है। समाजशास्त्रीय अध्ययनों से पता चलता है कि इस जनपद की सांस्कृतिक परंपराएं अंतरावलंबित हैं। मालवी ने यद्यपि दूसरी बोलियों को भी प्रभावित किया है पर बदले में वह भी प्रभावित हुई है।

उपसंहार

- हिंदी के उद्भव और विकास के बारे में संक्षेप में बताते हुए, उसका क्षेत्र विकास एवं बोलियाँ, उपबोलियों की जानकारी देते हुए इस लघु-शोध का मुख्य बिंदु "मालवी भाषा" की विस्तृत जानकारी दी गई है। 'मालवा' शब्द की व्युत्पत्ति संस्कृत के 'माल' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ है ऊँची भूमि या उन्नत भू भाग। आज मालवा क्षेत्र मध्यप्रदेश और राजस्थान के लगभग बीस जिलों में विस्तार लिए हुए हैं। "लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इंडिया" में ग्रियर्सन ने मालवी को राजस्थानी की मुख्य उपबोली माना है। मगर भाषा परक वैज्ञानिक अध्ययन करने पर मालवी का संभवतः स्वतंत्र अस्तित्व सिद्ध होता है और यह बोली संस्कृत व्याकरणों द्वारा सूचित अवंती अपभ्रंश से सीधे संबंधित प्रतीत होती है।
- 'रूपविज्ञान : सैद्धांतिक पक्ष' के विवेचन से यह स्पष्ट होता है कि विश्व में प्रारुपगत दो प्रकार की भाषाएँ हैं- १. योगात्मक २. अयोगात्मक। योगात्मक भाषाओं में आबद्ध रूपिम लगकर भाषाओं का प्रयोग होता है, इनमें प्रत्यय आबद्ध रूप में होते हैं। अयोगात्मक भाषाओं में आबद्ध रूपिम नहीं होते, केवल मुक्त रूपिम होते हैं, जो स्वतंत्र रूप से या अन्य मुक्त रूपिमों के साथ प्रयोग किए जा सकते हैं। अतः ज्यादातर भाषाएँ योगात्मक रहने से उन भाषाओं में विभिन्न रूप एवं शब्दों की रचना महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस सैद्धांतिक पक्ष से स्पष्ट होता है कि न्यूनतम अर्थवान इकाई में प्रत्यय एवं उपसर्ग के योग से रूपरचना और शब्द रचना दोनों ही होती है। शब्दरचना में उपसर्ग और शब्दसाधक प्रत्यय महत्वपूर्ण होते हैं।

हिंदी और मालवी के क्रिया पदों का विश्लेषण करते वक्त निम्न बिंदु सामने आए है:

- रूप वैज्ञानिक स्तर पर हिंदी में 'आ' के जगह मालवी में 'ई,ओ' का प्रयोग किया जाता है। उदाहरण: हिंदी का 'रहा' मालवी में 'रियो' हो जाता है।
- हिंदी में 'जा चुका' क्रिया का प्रयोग होता है वही मालवी में दोनों एक हो जाते है, जैसे 'ग्यो'।
- जिस प्रकार हिंदी में पढ़, चल, भूल जा का प्रयोग किया जाता है वहीं मालवी में शब्द, उच्चारण की दृष्टी से भण, चल्यो, भूली जा का प्रयोग अलग एवं ध्वनि परिवर्तन के रूप में मुख्य क्रिया का अंग होता है।

- हिंदी के यौगिक क्रिया में 'ले जा (लेकर जा), ढूंढ़ निकाल (ढूंढ़ कर निकाल)', जैसे यौगिक शब्द मालवी में सिमटकर 'लईजा और होदी ले' के रूप में शब्द एवं वाक्य स्तर पर प्रयोग होता है।
- हिंदी में बड़ों एवं बच्चों के लिए 'सोना' का प्रयोग किया जाता है, जबकि मालवी में बड़ों के लिए 'हुई' एवं बच्चों के लिए 'हूणे' क्रिया का प्रयोग किया जाता है।

अतः यह कहा जा सकता है कि यह लघु शोध ग्रंथ आने वाले समय में शोधार्थियों के लिए हिंदी और मालवी से जुड़े समस्याओं का निदान हेतु सहायक सिद्ध होगा।

संदर्भग्रंथ-सूची

1. गुरु, कामताप्रसाद. (2010). *हिंदी व्याकरण.* इलाहाबाद .लोकभारती प्रकाशन
2. चौधरी, तेजपाल. (2006). *हिंदी व्याकरण विमर्श.* दरियागंज नई दिल्ली. वाणी प्रकाशन
3. जोशी, प्रहलाद चन्द्र. (2001). *मालवी और उपबोलियों का व्याकरण*.जयपुर .दी स्टूडेंट्स बुक कम्पनी
4. तिवारी, भोलानाथ .(1994). *हिंदी भाषा की शब्द संरचना.* दिल्ली .वाणी प्रकाशन
5. तिवारी,भोलानाथ. बाला,किरण.(1983).*व्यतिरेकी भाषाविज्ञान*.दिल्ली.आलेख प्रकाशन
6. पाण्डेय, अनिल कुमार. (2010).*हिंदी संरचना के विविध पक्ष.* नयी दिल्ली. प्रकाशन संस्थान
7. परमार, श्याम .(1969).*मालवी लोक-साहित्य*. इलाहाबाद .हिन्दुस्तानी एकेडेमी
8. बाहरी,हरदेव.(2011).*हिंदी भाषा*.इलाहाबाद.अभिव्यक्तिप्रकाशन
9. रेड्डी,विजयराघव.(1986).*व्यतिरेकी भाषाविज्ञान.*आगरा.विनोद पुस्तकमंदिर
10. सिंह, सुरजभान. (2000). *हिंदी का वाक्यात्मक व्याकरण.* दिल्ली. साहित्य सहकार
11. शर्मा, राम किशोर. (2007). *भाषाविज्ञान हिंदी भाषा और लिपि*. इलाहाबाद .लोकभारती प्रकाशन
12. शर्मा, शैलेन्द्रकुमार. (2014). हिंदी *नाटक,निबंध तथा स्फुट गद्य विधाएँ एवं मालवी भाषा साहित्य*. भोपाल .मध्यप्रदेश हिंदी ग्रन्थ अकादमी
13. Chao,Y.(1966).*Language and Symbolic systems.*Cambridge.University press
14. Spencer,Andrew. Zwicky,Arnold.M. (1998)*The Handbook of Morphology*. Black well Publishers Ltd
15. Varghese,Bijumon.Mathews.Samuel,John Nelson.(2009)*The Malwi speaking people of Madhya Pradesh and Rajasthan: a sociolinguistic profile*.SIL International